

SONAM BALA

(DEPT. OF GEOGRAPHY)

A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR  
FOR B.A. - I (Subj)

PAPER - I, PHYSICAL & ECONOMIC GEOGRAPHY

LECTURE-40

UNIT-2

ARID TOPOGRAPHY (शुष्क स्थलाकृतियाँ)

वात गर्त (blowouts) → जब पवन तीव्र वेग वाली होती है तब वे अपने साथ धूल-कण लाती हैं जिससे चट्टानी सतह पर अपघर्षण होता है, जिससे उथले गर्त का निर्माण होता है, जिन्हें वात-गर्त कहते हैं।

गुहा (caves) → जब वात गर्त गहरे और विस्तृत हो जाते हैं, तो उन्हें गुहा कहते हैं।

द्वारक-शैल (Mushroom Rock),  
टैवल तथा पीठिका शैल → मरुस्थलों में अपघर्षण तथा अपकाहन द्वारा ही चट्टानों का कटाव होता है। कुछ प्रतिरोधी या मज़बूत चट्टानों का कटाव इस प्रकार होता है कि उनके आधार पतले व ऊपरी भाग विस्तृत और गोल टोपी के आकार के होते हैं, द्वारक के आकार में पाए जाते हैं। कभी-कभी प्रतिरोधी चट्टानों का ऊपरी हिस्सा मैज की भाँति विस्तृत होता है और अधिकतर ऐसे अपरोष पीठिका की भाँति खड़े रहते हैं।



MUSHROOM ROCK

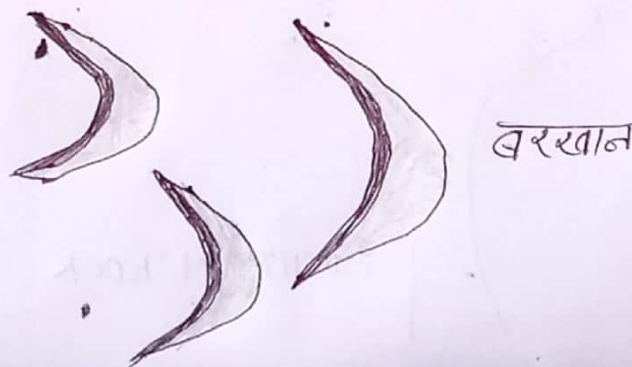
## निक्षेपात्मक स्थलरूप (Depositional Landforms)

(2)

पवन द्वारा बारीक रेत का परिवहन अधिक ऊँचाई व अधिक दूरी तक होता है। पवनों के वेग के अनुसार मोटे आकार के कण धरातल के साथ घर्षण करते हैं, अपने आपस में ये मोटे कण टकराते हैं तथा एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिसे साल्टेशन (Saltation) कहते हैं। पवन एक छँटाई करने वाला कारक भी है (Sorting Agent)। अर्थात् पवन अपने वेग के अनुसार महीन तथा मोटे कणों को उठाता है। हवा में लटकते महीन कण अपेक्षा अधिक दूरी तक उड़ा कर ले जाए जाते हैं। पवनों द्वारा रेत कणों का परिवहन उनके भार तथा आकार के अनुसार होता है। पवनों की परिवहन प्रक्रिया में ही छँटनी का काम ही जाता है। जब पवन की गति घट जाती है या लगभग रुक जाती है तो कणों के आकार के आधार पर निक्षेपण शुरू हो जाता है। रेत की उपलब्धता एवं स्थायी पवन की दिशा के आधार पर शुष्क प्रदेशों में पवन निक्षेपित स्थलरूप विकसित होते हैं।

बालूका स्तूप (SAND DUNES) → उष्ण मरुस्थलों में बालूका-स्तूपों के निर्माण के लिए अवरोधों का होना बहुत आवश्यक है। बालूका स्तूप निम्न प्रकार के होते हैं—

(i) बरखान → नव चंद्राकार स्तूप जिनकी मुजारें पवनों की दिशा में निकली होती हैं, बरखान कहलाते हैं।



(ii) परवलयिक बालूका-रूप (Parabolic Sanddunes) → जहाँ रैतीली

आंशिक रूप से वनस्पति भी पाई जाती है, धरातल पर वहाँ परवलयिक बालूका रूपों का निर्माण होता है। पवनों की दिशा के स्थायी रहने पर परवलयिक बालूका रूप टिड्डे, बरखान से अलग आकृति के होते हैं।



परवलयिक बालूका रूप

(iii) सीफ (SEIF) → सीफ बरखान की तरह ही होते हैं किंतु इनमें सिर्फ एक ही भुजा होती है। ऐसा पवनों की दिशा में बदलाव के कारण होते हैं। सीफ की यह भुजा ऊँची व अधिक लंबाई में विकसित हो सकती है।



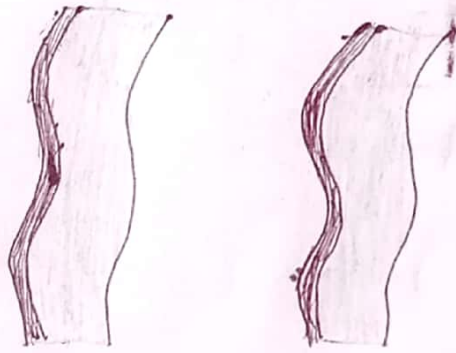
सीफ

(iv) अनुदैर्घ्य बालूका-रूप (Longitudinal dunes) → जब पवनों की दिशा स्थायी तथा रेत की आपूर्ति कम रहती है तो ये स्तूप बनते हैं। ये अत्यधिक लंबे व कम ऊँचाई के कटक की तरह दिखाई देते हैं।



अनुदैर्घ्य बालूका रूप

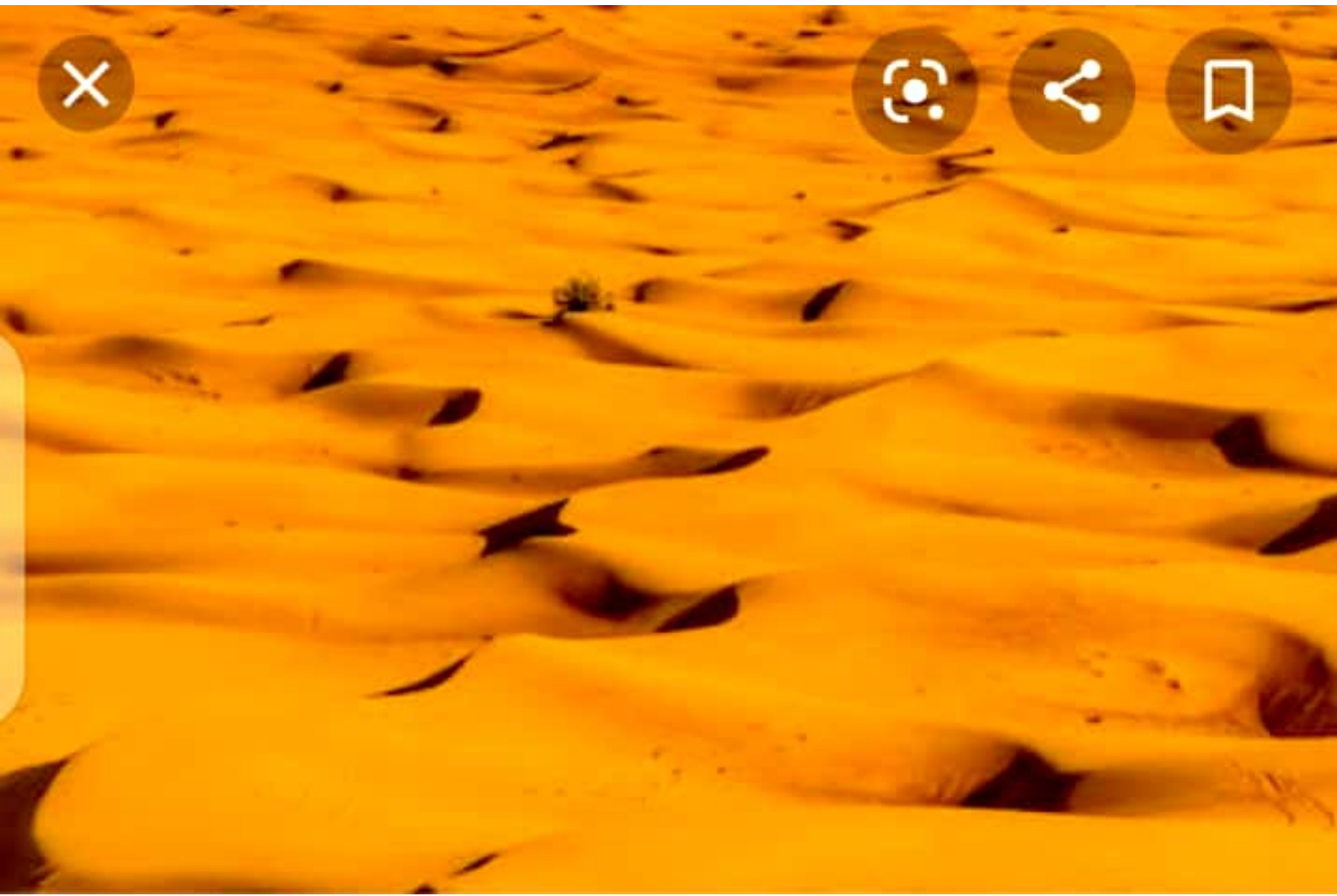
(iv) अनुप्रस्थ बालूका स्तूप → ये प्रचलित पवनों की दिशा के  
 (Transverse dunes) समकोण में बनते हैं। ये अधिक  
 लंबे व कम ऊँचाई वाले होते हैं। इसके निर्माण के लिए  
 रेत का स्तरीय पवनों की दिशा के समकोण पर एवं पवनों  
 की दिशा निश्चित होनी चाहिए। रेत की उपलब्धता अधिक  
 रहने से अधिकतर नियमित बालूका-स्तूप एक-दूसरे  
 में मिलकर अपना अस्तित्व खो देते हैं। मरुस्थलों में  
 अधिकतर स्तूपों का स्थानांतरण होता रहता है। कुछ  
 स्तूप विशेषकर मानी मानवीय निवासों के पास पाए जाते  
 हैं।



अनुप्रस्थ बालूका-स्तूप









# *Mushroom rocks*





# Longitudinal Dunes



# Transverse Dunes



